SAMPLE QUESTION PAPER - 2

Hindi Core (302)

Class XII (2024-25)

निर्धारित समय: 3 hours **अधिकतम अंक: 80**

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका पालन कीजिए :-
- यह प्रश्न-पत्र तीन खण्डों में विभाजित है।
- खंड - क में अपठित बोध पर आधारित प्रश्न पूछे गए हैं। सभी प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- खंड - ख में पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- खंड - ग में पाठ्यपुस्तक आरोह तथा वितान से प्रश्न पूछे गए हैं। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं।
- तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
- यथासंभव तीनों खंडों के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः लिखिए।

खंड क (अपठित बोध)

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (10)** **[10]**

राष्ट्र केवल जमीन का टुकड़ा ही नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत होती है, जो हमे अपने पूर्वजो से परंपरा के रूप में प्राप्त होती है, जिसमे हम बड़े होते है, शिक्षा पाते हैं और साँस लेते हैं-हमारा अपना राष्ट्र कहलाता है और उसकी पराधीनता व्यक्ति की परतंत्रता की पहली सीढ़ी होती है। ऐसे ही स्वतंत्र राष्ट्र की सीमाओ में जन्म लेने वाले व्यक्ति का धर्म, जाति, भाषा या संप्रदाय कुछ भी हो, आपस मे स्नेह होना स्वाभाविक है। राष्ट्र के लिए जीना और काम करना, उसकी स्वतंत्रता तथा विकास के लिए काम करने की भावना, राष्ट्रीयता कहलाती है।

जब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है, तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है। राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त है-देश को प्राथमिकता, भले ही हमे 'स्व' को मिटाना पड़े।

महात्मा गाँधी, तिलक, सुभाषचंद्र बोस आदि के कार्यों से पता चलता है कि राष्ट्रीयता की भावना के कारण उन्हें अनगिनत कष्ट उठाने पड़े, कितु वे अपने निश्चय मे अटल रहे। व्यक्ति को निजी अस्तित्व कायम रखने के लिए पारस्परिक सभी सीमाओं की बाधाओ को भुलाकर कार्य करना चाहिए, तभी उसकी नीतियाँ-रीतियाँ राष्ट्रीय कही जा सकती है।

जब-जब भारत में फूट पड़ी, तब-तब विदेशियो ने शासन किया। चाहे जातिगत भेदभाव हो या भाषागत तीसरा व्यक्ति उससे लाभ उठाने का अवश्य यत्न करेगा। आज देश में अनेक प्रकार के आंदोलन चल रहे है।

कहीं भाषा को लेकर संघर्ष हो रहा है, तो कही धर्म या क्षेत्र के नाम पर लोगो को निकाला जा

रहा है, जिसका परिणाम हमारे सामने है।आदमी अपने अहं में सिमटता जा रहा है। फलस्वरूप राष्ट्रीय बोध का प्रभाव परिलक्षित हो रहा है।

(i) राष्ट्रीयता क्या कहलाती है? (1)

क) धर्म के प्रति निष्ठा

ख) जाति के प्रति निष्ठा

ग) राष्ट्र के लिए जीना और काम करना

घ) क्षेत्र के प्रति निष्ठा

(ii) राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त क्या है? (1)

क) धर्म को प्राथमिकता देना

ख) देश को प्राथमिकता देना

ग) जाति को प्राथमिकता देना

घ) भाषा को प्राथमिकता देना

(iii) महात्मा गाँधी, तिलक और सुभाषचंद्र बोस ने क्या प्रदर्शित किया? (1)

क) जातिगत भेदभाव

ख) व्यक्तिगत स्वतंत्रता

ग) राष्ट्रीयता की भावना

घ) भाषागत संघर्ष

(iv) व्यक्ति की परतंत्रता की पहली सीढ़ी क्या होती है? (1)

(v) राष्ट्रीयता की भावना कैसे विकसित की जा सकती है? (2)

(vi) भारत में फूट पड़ने पर क्या होता है? (2)

(vii) आज के समय में देश में कौन-कौन से संघर्ष चल रहे हैं? (2)

2. **निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (8)** **[8]**

जिनकी भुजाओं की शिराएँ फड़की ही नहीं,
जिनके लहू में नहीं वेग है अनल का
शिव का पादोदक है पेय जिनका रहा,
चखा ही जिन्होंने नहीं स्वाद हलाहल का
जिनके हृदय में कभी आग सुलगी ही नहीं
ठेस लगते ही अहंकार नहीं छलका।
जिनको सहारा नहीं भुज के प्रताप का है,
बैठते भरोसा किए वे ही आत्मबल का।
उसकी क्षमा, सहिष्णुता का है महत्त्व ही क्या
करना ही आता नहीं जिनको प्रहार है?
करुणा, क्षमा को छोड़ और क्या उपाय उसे
ले न सकता जो बैरियों से प्रतिकार है?
सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव
जिसकी नसों में नहीं पौरुष की धार है;

करुणा, क्षमा हैं क्लीव जाति के कलंक घोर,
क्षमता क्षमा की शूरवीरों का सिंगार है।।

(i) 'जिनके हृदय में कभी आग सुलगी ही नहीं' का क्या अर्थ है? (1)

क) जिनके हृदय में वीरता और उत्साह की कमी है
ख) जिनके हृदय में केवल प्रेम और करुणा है
ग) जिनके हृदय में क्रोध और आक्रोश है
घ) जिनके हृदय में किसी भी भावना की कमी है

(ii) कविता के अनुसार, 'करुणा, क्षमा को छोड़ और क्या उपाय उसे' से कवि क्या कह रहे हैं? (1)

क) करुणा और क्षमा की महत्वता
ख) प्रतिकार के बिना समाधान
ग) शौर्य और शक्ति के बिना जीवन
घ) शांति और संतुलन की खोज

(iii) कविता में 'करुणा, क्षमा हैं क्लीव जाति के कलंक घोर' से कवि का क्या दृष्टिकोण है? (1)

क) करुणा और क्षमा वीरता के गुण हैं
ख) करुणा और क्षमा क्लीवता का प्रतीक हैं
ग) करुणा और क्षमा समाज के लिए आवश्यक हैं
घ) करुणा और क्षमा धर्म और नैतिकता के प्रतीक हैं

(iv) कविता में 'शिव का पादोदक' से क्या संकेत मिलता है? (1)
(v) कविता के अनुसार, क्यों करुणा और क्षमा को 'क्लीव जाति के कलंक' के रूप में देखा गया है? (2)
(vi) कविता के अनुसार, 'सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव' का क्या तात्पर्य है? (2)

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. **दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।** **[6]**

(i) **महानगरों में पनपती मॉल संस्कृति** विषय पर निबंध लिखिए। **[6]**

(ii) **सांप्रदायिकता की समस्या** विषय पर निबंध लिखिए। **[6]**

(iii) **मेरी प्रिय भाषा** विषय पर रचनात्मक लेख लिखिए। **[6]**

4. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)** **[8]**

(i) प्रेस-विज्ञप्ति किसे कहते हैं? **[2]**

(ii) **इंटरनेट का बढ़ता चलन** विषय पर एक आलेख तैयार कीजिए। [2]

(iii) **मतदान केंद्र पर लगा लोकतंत्र का मेला** विषय पर एक फ़ीचर तैयार कीजिए। [2]

(iv) नाटक के विभिन्न तत्वों पर प्रकाश डालिए। [2]

5. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)** **[8]**

(i) विशेष लेखन में **डेस्क** की क्या भूमिका होती है? [4]

(ii) समाचार लेखन की प्रक्रिया में उल्टा पिरामिड सिद्धांत क्या है? [4]

(iii) समाचार लेखन की सबसे महत्त्वपूर्ण शैली कौन-सी है? इसके सभी चरणों की जानकारी देते हुए इस शैली को स्पष्ट कीजिए। [4]

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्नलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

(i) बच्चे नीड़ से किसलिए झाँक रहे होंगे?

क) बाहर घूमने के कारण
ख) प्रकृति का आनंद लेने के कारण
ग) भूखा होने के कारण
घ) माता-पिता की प्रतीक्षा के कारण

(ii) चिड़िया अपने बच्चों के लिए चिंतित है, यह कैसे स्पष्ट होता है?

क) बहुत दूर तक उड़ने से
ख) चिड़िया की उड़ान की गति से
ग) चिड़िया के मंद गति से उड़ने से
घ) चिड़िया द्वारा बच्चों को अकेला छोड़ने से

(iii) प्रस्तुत काव्यांश में कवि किससे प्रभावित होता है?

क) अपनी प्रिय से
ख) चिड़िया के बच्चों से
ग) प्रकृति की अनुपम महिमा से
घ) चिड़िया के परों की चंचल गति से

(iv) कवि के पैरों की गति को कौन-सा भाव शिथिल कर देता है?

क) बच्चों की व्याकुलता	ख) कवि से मिलने को किसी का व्याकुल न होना
ग) चिड़िया की तीव्र उड़ान	घ) समय का तीव्रगति से व्यतीत होना

(v) **दिन जल्दी-जल्दी ढलता है** पंक्ति के माध्यम से किसके महत्त्व को दर्शाया गया है?

क) बच्चे के	ख) कवि के
ग) समय के	घ) चिड़िया के

7. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

(i) कवि ने खेत की तुलना काग़ज़ से क्यों की है? **छोटा मेरा खेत** कविता के आधार पर लिखिए। **[3]**

(ii) **खेती न किसान को** छंद के आधार पर बताइए कि तुलसीदास ने अपने समाज के लोगों की जीविका विहीनता का चित्रण कैसे किया है। **[3]**

(iii) प्रतापनारायण मिश्र का निबंध **बात** और नागार्जुन की कविता **बातें** ढूँढ़ कर पढ़ें। **[3]**

8. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

(i) बच्चों के झुंड में कवि **आलोक धन्वा** को क्या आकर्षक लगता है? **[2]**

(ii) **कैमरे में बंद अपाहिज** कविता में कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी गई हैं- आपकी समझ से इसका क्या औचित्य है? **[2]**

(iii) **बादल राग** कविता में रूपक अलंकार का प्रयोग कहाँ-कहाँ हुआ है? संबंधित वाक्यांश को छाँटकर लिखिए। **[2]**

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:** **[5]**

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है। जाति-प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की इच्छा पर निर्भर नहीं रहता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। 'पूर्व लेख' ही इसका आधार है। इस आधार पर हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न इतनी बड़ी समस्या नहीं जितनी यह कि बहुत से लोग 'निर्धारित कार्य को 'अरुचि' के साथ केवल विवशतावश करते हैं। ऐसी स्थिति स्वभावत: मनुष्य को दुर्भावना से प्रस्त रहकर टालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो न दिमाग, कोई कुशलता कैसे प्राप्त की जा सकती है। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है कि आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा

हानिकारक प्रथा है, क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़ कर निष्क्रिय बना देती है। (बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर)

(i) श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा किससे युक्त है?

क) सरल दोषों से
ख) दुःखद दोषों से
ग) सुखद परिणामों से
घ) गंभीर दोषों से

(ii) जाति-प्रथा का श्रम विभाजन किस पर निर्भर नहीं रहता?

क) मनुष्य की स्वेच्छा पर
ख) मनुष्य की गलती पर
ग) मनुष्य की समझदारी पर
घ) मनुष्य की शिक्षा पर

(iii) श्रम विभाजन पर मनुष्य की किस भावना का कोई महत्त्व नहीं रहता?

क) सामाजिक भावना
ख) राजनीतिक भावना
ग) भेदभावपूर्ण भावना
घ) व्यक्तिगत भावना

(iv) निम्नलिखित कथन (A) तथा कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए।
कथन (A): यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है कि आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक प्रथा है ।
कारण (R): क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़ कर निष्क्रिय बना देती है।

क) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
ख) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।
ग) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
घ) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

(v) गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए –

i. जाति-प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की स्वेच्छा पर निर्भर नहीं रहता ।
ii. आर्थिक रूप से जाति-प्रथा एक हानिकारक प्रथा है ।
iii. श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है ।

उपरिलिखित कथनों में से कौन सही है/हैं ?

क) सभी विकल्प सही हैं　　　　ख) केवल i

ग) केवल ii　　　　घ) केवल iii

10. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[6]**

(i) दंगल में विजयी होने के पश्चात् लुट्टन सिंह की जीवन शैली में क्या परिवर्तन आ गया था? **[3]**

(ii) भक्तिन की तुलना हनुमान जी से करने के कारणों को स्पष्ट कीजिए। **[3]**

(iii) **शिरीष के फूल** पाठ में लेखक ने शिरीष, अवधूत और गांधी जी को एक ही श्रेणी में क्यों रखा है? पाठ के अनुसार इस समानता का आधार स्पष्ट कीजिए। **[3]**

11. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[4]**

(i) अपने सामान की बिक्री को बढ़ाने के लिए आज किन-किन तरीकों का प्रयोग किया जा रहा है? उदाहरण सहित उनका संक्षिप्त परिचय दीजिए। आप स्वयं किस तकनीक या तौर-तरीके का प्रयोग करना चाहेंगे जिससे बिक्री भी अच्छी हो और उपभोक्ता गुमराह भी न हो। **[2]**

(ii) **काले मेघा पानी दे** के आधार पर जीजी की दृष्टि में त्याग और दान को परिभाषित कीजिए। **[2]**

(iii) **मेरी कल्पना का आदर्श समाज** के आधार पर बताइए कि लोकतंत्र का वास्तविक स्वरूप किसे कहा गया है। **[2]**

12. **निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:** **[10]**

(i) यशोधर बाबू अपने रोल मॉडल किशनदा से क्यों प्रभावित हैं? **सिल्वर वैडिंग** कहानी के आधार पर लिखिए। **[5]**

(ii) स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक आनंद यादव के मन में कैसे पैदा हुआ? **[5]**

(iii) कैसे कहा जा सकता है **सिंधु सभ्यता आडंबर विहीन सभ्यता थी**? उदाहरण सहित **अतीत में दबे पाँव** के आधार पर स्पष्ट कीजिए। **[5]**

Solution

SAMPLE QUESTION PAPER - 2

Hindi Core (302)

Class XII (2024-25)

खंड क (अपठित बोध)

1. (i) ग) राष्ट्र के लिए जीना और काम करना

(ii) ख) देश को प्राथमिकता देना

(iii) ग) राष्ट्रीयता की भावना

(iv) राष्ट्र की पराधीनता व्यक्ति की परतंत्रता की पहली सीढ़ी होती है।

(v) राष्ट्रीयता की भावना विकसित करने के लिए व्यक्ति को निजी अस्तित्व कायम रखने के लिए पारस्परिक सभी सीमाओं की बाधाओं को भुलाकर कार्य करना चाहिए।

(vi) भारत में फूट पड़ने पर विदेशियों ने शासन किया और तीसरा व्यक्ति उससे लाभ उठाने का यत्न करता है।

(vii) आज के समय में देश में भाषा, धर्म, और क्षेत्र के नाम पर संघर्ष चल रहे हैं।

2. i) क) जिनके हृदय में वीरता और उत्साह की कमी है

(ii) ख) प्रतिकार के बिना समाधान

(iii) ख) करुणा और क्षमा क्लीवता का प्रतीक हैं

(iv) 'शिव का पादोदक' से संकेत मिलता है कि कवि उन लोगों की बात कर रहे हैं जिनका आदर्श और जीवन शिव की तपस्या और आत्म-संयम के सिद्धांतों पर आधारित है।

(v) कविता के अनुसार, करुणा और क्षमा को 'क्लीव जाति के कलंक' के रूप में देखा गया है क्योंकि ये गुण वीरता और शक्ति के अभाव के प्रतीक माने जाते हैं। कवि का मानना है कि करुणा और क्षमा शूरवीरों की पहचान नहीं होतीं और ये गुण बल और प्रतिकार की कमी का संकेत देते हैं।

(vi) 'सहता प्रहार कोई विवश, कदर्य जीव' का तात्पर्य है कि केवल वही व्यक्ति प्रहार सह सकता है जिसकी नसों में वीरता और शक्ति का प्रवाह नहीं होता। यह किसी कमजोरी या विवशता का संकेत है।

खंड- ख (अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्यपुस्तक के आधार पर)

3. दिए गए तीन विषयों में से किसी एक विषय पर आधारित लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन लिखिए।

(i) **महानगरों में पनपती मॉल संस्कृति**

मॉल संस्कृति का उदय मुख्यतः 1990 के दशक के बाद हुआ, जब भारत में आर्थिक उदारीकरण की नीतियाँ लागू की गईं। इसके परिणामस्वरूप, विदेशी निवेश और उपभोक्ता वस्तुओं की उपलब्धता में वृद्धि हुई। महानगरों में बड़े-बड़े शॉपिंग मॉल्स का निर्माण हुआ, जहाँ एक ही छत के नीचे विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ और सेवाएँ उपलब्ध हैं।

मॉल संस्कृति के लाभ

सुविधा: मॉल्स में एक ही स्थान पर विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ और सेवाएँ उपलब्ध होती हैं, जिससे उपभोक्ताओं को सुविधा होती है।

मनोरंजन: मॉल्स में सिनेमा हॉल, गेमिंग जोन, और फूड कोर्ट जैसी सुविधाएँ होती हैं, जो परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताने के लिए आदर्श स्थान बनाते हैं।

आर्थिक विकास: मॉल्स के निर्माण से रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिलता है।

मॉल संस्कृति के नुकसान

स्थानीय व्यापार पर प्रभाव: मॉल्स के उदय से छोटे और स्थानीय व्यापारियों को नुकसान होता है, क्योंकि उपभोक्ता मॉल्स की ओर आकर्षित होते हैं।

पर्यावरण पर प्रभाव: मॉल्स के निर्माण और संचालन से पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, जैसे कि ऊर्जा की खपत और कचरे का उत्पादन।

सामाजिक असमानता: मॉल्स में उपलब्ध वस्तुएँ और सेवाएँ अक्सर महंगी होती हैं, जो केवल उच्च और मध्यम वर्ग के लोगों के लिए सुलभ होती हैं, जिससे सामाजिक असमानता बढ़ती है।

(ii) **सांप्रदायिकता की समस्या**

सांप्रदायिकता एक गंभीर सामाजिक समस्या है जो किसी भी देश की एकता और अखंडता को प्रभावित कर सकती है। यह समस्या विशेष रूप से उन देशों में अधिक प्रचलित है जहां विभिन्न धर्मों और संप्रदायों के लोग एक साथ रहते हैं। इस निबंध में हम सांप्रदायिकता की समस्या, उसके कारण, प्रभाव और समाधान पर चर्चा करेंगे।

सांप्रदायिकता का अर्थ है किसी विशेष धर्म या संप्रदाय के प्रति अत्यधिक लगाव और अन्य धर्मों के प्रति द्वेष की भावना रखना। यह भावना समाज में विभाजन और तनाव पैदा करती है।

सांप्रदायिकता का मुख्य उद्देश्य अपने धर्म या संप्रदाय को श्रेष्ठ साबित करना और अन्य धर्मों को नीचा दिखाना होता है।

सांप्रदायिकता के कई कारण हो सकते हैं:

राजनीतिक स्वार्थ: कुछ राजनेता अपने स्वार्थ के लिए सांप्रदायिकता को बढ़ावा देते हैं। वे लोगों को धर्म के नाम पर बांटते हैं और अपने राजनीतिक लाभ के लिए उनका उपयोग करते हैं।

शिक्षा की कमी: जब लोगों में शिक्षा की कमी होती है, तब वे आसानी से सांप्रदायिकता के शिकार हो जाते हैं। उन्हें सही और गलत का ज्ञान नहीं होता और वे अंधविश्वासों में फंस जाते हैं।

सांप्रदायिकता के प्रभाव बहुत ही विनाशकारी होते हैं:

सामाजिक विभाजन: सांप्रदायिकता समाज को विभाजित करती है और लोगों के बीच नफरत और द्वेष की भावना पैदा करती है।

हिंसा और दंगे: सांप्रदायिकता के कारण हिंसा और दंगे होते हैं, जिससे जान-माल की हानि होती है और समाज में अशांति फैलती है।

राष्ट्रीय एकता को खतरा: सांप्रदायिकता राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए खतरा बन जाती है। यह देश की प्रगति में बाधा डालती है और विकास को प्रभावित करती है।

धार्मिक अंधविश्वास: जब लोग अपने धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ मानते हैं और अन्य धर्मों को नीचा समझते हैं, तब सांप्रदायिकता की भावना बढ़ती है।

(iii) **'मेरी प्रिय भाषा - हिन्दी'**

"हृदय की कोई भाषा नहीं है; हृदय, हृदय से बात-चीत करता है ; और हिन्दी हृदय की भाषा है...।" **(महात्मा गाँधी)**

किसी भी देश की मूल भाषा (राज भाषा) उसकी पहचान तथा गौरव हुआ करती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि हिन्दी पूरे भारतवर्ष में सबसे ज्यादा बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिन्दी

हम हिन्दुस्तानियों के स्वाभिमान का प्रतीक है। हमारी भावनाओं को साझा करने का ख़ूबसूरत आधार है, जो हमारे शरीर के हर हिस्से में रची-बसी है। एक भारतीय होने के नाते हिन्दी के प्रति अपना प्रेम और सम्मान प्रकट करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है।

स्वतंत्रता पश्चात् संविधान सभा के द्वारा 14 सितंबर 1949 को यह निर्णय लिया गया कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी। तत्पश्चात्, आगे इसी खास निर्णय के महत्व को बरकरार रखते हुए तथा हिन्दी को प्रसारित करने के उद्देश्य से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से प्रतिवर्ष 14 सितंबर को 'हिन्दी दिवस' मनाने की परम्परा की शुरूआत हुई।

हिन्दी, दुनिया की चौथी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। एक ऐसी भाषा, जिसका ऐतिहासिक सफ़र बेहद समृद्ध रहा है। जो ख़ुद में मुकम्मल और सशक्त होने के पैमाने पर खरा उतरती है। मगर अफ़सोस, आज हिन्दी अपने ही मुल्क में उपेक्षित जीवन जीने को विवश है। हम अकसर हिन्दी दिवस के अवसर पर अंग्रेज़ी भाषा के विरुद्ध नाराज़गी जताते हैं। मगर ख़ामियाँ अंग्रेज़ी में नहीं है। वह भी एक भाषा है। और किसी भाषा को सीखने में कोई बुराई नहीं हो सकती। बल्कि ख़ामियाँ तो हम में है, जो एक तरफ़ हिन्दी को विश्व जगत में सर्वोच्च पहचान दिलाने का सपना देखते हैं। वहीं दूसरी तरफ़ हिन्दी में बात करने से हम अपमानित महसूस करते हैं। हिन्दी तो वर्षों से अपने वास्तविक अस्तित्व के तलाश में है। हिन्दी बेताब है सर्वोच्च शिखर पर पंख फैलाने के लिए। लेकिन हमने अपनी हिन्दी को पहचानने में भूल कर दी। आख़िर में मेरा सवाल बस इतना ही है- " जब सात समन्दर पार करके अंग्रेज़ी भाषा हमारे मुल्क में आकर सबके दिलों पर राज कर सकती है, तो फिर हिन्दी सात समन्दर पार क्यूँ नहीं जा सकती?" भारतीय होने के नाते हमें हिन्दी को खुले मन से अपनाना होगा और गर्व से कहना होगा- "हिंदी हैं हम वतन है हिंदुस्तां हमारा"।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये: (2 X 4 = 8)

(i) कोई संस्थान या व्यक्ति जब किसी विषय या बैठक में लिए गए निर्णयों को जन-सामान्य तक पहुँचाना चाहता है तो वह 'प्रेस विज्ञप्ति' जारी करता है।

(ii) **'इंटरनेट का बढ़ता चलन'**

इंटरनेट आज के दौर की ज़रूरत बन गया है। इंटरनेट के बिना हम देश-दुनिया की ख़बर से वंचित ही नहीं रहते, बल्कि आज इंटरनेट हमारे हर कार्य में अपनी मज़बूत पकड़ बना चुका है। इंटरनेट मनुष्य को विज्ञान द्वारा दिया गया एक सर्वश्रेष्ठ उपहार है। इंटरनेट अनंत संभावनाओं का साधन है। इंटरनेट के माध्यम से हम कोई भी सूचना, चित्र, वीडियो आदि दुनिया के किसी भी कोने से किसी भी कोने तक पल भर में भेज सकते हैं।

सूचनाओं का आदान प्रदान करने के लिए टी.सी.पी/आई.पी प्रोटोकॉल के द्वारा दो अथवा कई कम्प्यूटर्स को एक साथ जोड़कर रिलेशन बनाए जाने की प्रक्रिया को 'इंटरनेट' कहते हैं। 1969 में टिम बर्नर्स ली ने इंटरनेट का आविष्कार किया। इसे सबसे पहले सन् 1969 में अमेरिका के प्रतिरक्षा विभाग द्वारा एडवांस रिसर्च प्रोजेक्ट एजेंसी नेटवर्क के गुप्त आंकड़ों और सूचनाओं को दूर दराज़ के विभिन्न राज्यों तक भेजने व प्राप्त करने में लाया गया था। हमारे भारत देश में इंटरनेट 1980 के दशक में आया था।

आज मेट्रो, रेलवे, व्यापारिक उद्योग, दुकान, स्कूल, कॉलेज, शिक्षण संस्थान, एनजीओ,

विश्वविद्यालय, कार्यालय (सरकारी तथा गैर-सरकारी) में हर प्रकार का डाटा कंप्यूटरीकृत हो चुका है, जिससे कार्यों में पारदर्शिता बढ़ी है। इंटरनेट के माध्यम से हम अपने विचारों और वस्तुओं का पूरी दुनिया में प्रचार कर सकते हैं। यह विज्ञापन का सबसे सरल और प्रभावी माध्यम है। इंटरनेट का उपयोग हम ईमेल भेजने, वीडियो, चैटिंग, नेट सर्फिंग, बिल जमा कराने, टिकट बुक कराने, शॉपिंग करने के लिए, सूचनाएँ बेचने और प्रदान करने के लिए, नौकरी खोजने और प्रदान करने के लिए, विज्ञापन करने के लिए, सीधे अपने ग्राहकों तक पहुँचने के लिए, मनोरंजन इत्यादि सभी कार्य करने के लिए करते हैं। आज इंटरनेट के कारण शिक्षा के क्षेत्र में बहुत अधिक बदलाव आया है, क्योंकि पिछड़े हुए क्षेत्रों में इंटरनेट की उपलब्धता के कारण, वहाँ के विद्यार्थियों को उत्तम शिक्षा मिल रही है, जिससे रोज़गार में वृद्धि हो रही है और देश की तरक्की भी तेजी से हो रही है। इसकी इसी विशेषता के कारण उपयोगकर्ताओं की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ी है।

(iii) **'मतदान केंद्र पर लगा लोकतंत्र का मेला**

भारत में चुनाव एक तरह से लोकतंत्र का महापर्व माना जाता है, जिसमें 18 वर्ष पूर्ण करने वाले सभी भारतीय अपनी सहभागिता सुनिश्चित करते हैं तथा एक मजबूत सरकार चुनने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, यहां जनता के द्वारा शासन होता है। जन-जन का मतदान यहाँ पर, भाग्य विधाता होता है।

भारतीय संविधान के अनुसार देश में नियमित, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव आयोजित करने का अधिकार निर्वाचन आयोग को प्राप्त है। सरकार प्रत्येक पाँच वर्ष के अंतराल पर चुनाव के माध्यम से चुनी जाती है। देश के नागरिक इस चुनावी प्रक्रिया में सीधे तौर पर भाग लेते हैं। आज जैसे-जैसे लोग शिक्षित हो रहे हैं, उनका सोचने और समझने का नज़रिया बदल रहा है। जिसका असर चुनाव में भी देखने को मिलता है। इस आम चुनाव में एक-एक वोट की क़ीमत पता चलती है तथा जनप्रतिनिधियों को जनता की ताक़त का एहसास होता है। जनता चाहे तो अपने मताधिकार का इस्तेमाल करके भ्रष्ट्राचारी शासन पर अंकुश लगा सकती है या तख्तापलट फैसला ले सकती है। चुनाव आयोजित करने एवं चुनाव के बाद के विवादों से संबंधित सभी विषयों को लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 एवं लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 के अंतर्गत सम्मिलित किया गया है।

(iv) नाटक की रचना में विभिन्न तत्वों का महत्त्वपूर्ण योगदान है जो निम्नलिखित है:-

i. **कथानक/कथावस्तु-** नाटक में जो कुछ कहा जाए उसे कथानक अथवा कथावस्तु कहते हैं।
ii. **पात्र योजना/चरित्र-चित्रण-** यह नाटक का महत्त्वपूर्ण तत्व है। पात्रों के माध्यम से ही नाटककार कथानक को गतिशीलता प्रदान करता है।
iii. **संवाद योजना अथवा कथोपकथन-** संवाद का शाब्दिक अर्थ है-परस्पर बातचीत I नाटक में पात्रों की परस्पर बातचीत को संवाद अथवा कथोपकथन कहते हैं।
iv. **उद्देश्य-** साहित्य की अन्य विधाओं के समान नाटक भी एक उद्देश्य पूर्ण रचना है।
v. **भाषा-शैली-** यह नाटक का महत्त्वपूर्ण तत्व है क्योंकि इसके माध्यम से ही नाटककार अपनी संवेदनाओं को अभिव्यक्त करता है।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: (4 X 2 = 8)

(i) विशेष लेखन में "डेस्क" का खास महत्त्व होता है। समाचार पत्र-पत्रिकाओं ,रेडियो ,टीवी आदि में विशेष लेखन के लिए अलग "डेस्क" होता है और उस पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी

अलग होता है जैसे समाचारपत्र में बिजनेस कारोबार का अलग डेस्क होता है तो खेल का अलग। इन डेस्कों पर कार्य करने वाले उपसंपादकों और संवाददाताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने -अपने क्षेत्र में विशेषज्ञ हों।

(ii) उल्टा पिरामिड सिद्धांत समाचार लेखन का बुनियादी सिद्धांत है। यह समाचार लेखन का सबसे सरल, उपयोगी और व्यावहारिक सिद्धांत है। समाचार लेखन का यह सिद्धांत कथा या कहनी लेखन की प्रक्रिया के ठीक उलट है। इसमें किसी घटना, विचार या समस्या के सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों या जानकारी को सबसे पहले बताया जाता है, जबकि कहनी या उपन्यास में क्लाइमेक्स सबसे अंत में आता है। इसे उल्टा पिरामिड इसलिये कहा जाता है क्योंकि इसमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना सबसे पहले आती है जबकि पिरामिड के निचले हिस्से में महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना होती है। इस शैली में पिरामिड को उल्टा कर दिया जाता है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण सूचना पिरामिड के सबसे उपरी हिस्से में होती है आरे घटते हुये क्रम में सबसे कम महत्व की सूचनाये सबसे निचले हिस्से में होती है।

(iii) समाचार लेखन की सबसे महत्त्वपूर्ण शैली **उल्टा पिरामिड शैली** है।

इस शैली में:

i. **सबसे महत्वपूर्ण जानकारी पहले लिखी जाती है:** शीर्षक, लीड, और पहले कुछ पैराग्राफ में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य शामिल होते हैं।

ii. **कम महत्वपूर्ण जानकारी बाद में लिखी जाती है:** जैसे-जैसे आप लेखन में आगे बढ़ते हैं, जानकारी कम महत्वपूर्ण होती जाती है।

iii. **पाठक को जल्दी से जानकारी मिल जाती है:** यह शैली पाठक को जल्दी से सबसे महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती है, भले ही वे लेख को पूरा न पढ़ें।

iv. **लेख को संक्षिप्त करना आसान होता है:** यदि आवश्यक हो, तो लेख के अंत से जानकारी हटाकर इसे आसानी से छोटा किया जा सकता है।

उल्टा पिरामिड शैली समाचार लेखन के लिए एक प्रभावी तरीका है क्योंकि यह महत्वपूर्ण जानकारी पहले प्रस्तुत करके, पाठकों को पढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यह शैली लेखकों को जानकारी को एक तार्किक क्रम में प्रस्तुत करने में मदद करती है और पाठकों और लेखकों दोनों का समय बचाती है।

उदाहरण:

- **शीर्षक:** "प्रधानमंत्री ने राष्ट्र को संबोधित किया, अर्थव्यवस्था पर ध्यान केंद्रित किया।"
- **लीड:** "प्रधानमंत्री ने आज राष्ट्र को संबोधित किया और अर्थव्यवस्था पर ध्यान केंद्रित करते हुए कई महत्वपूर्ण घोषणाएं कीं। उन्होंने कहा कि सरकार अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और सभी नागरिकों के लिए समृद्धि लाने के लिए प्रतिबद्ध है।"
- **पहला पैराग्राफ:** "प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि सरकार अगले वर्ष में बुनियादी ढांचे में ₹ 10 लाख करोड़ का निवेश करेगी। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने और किसानों की आय दोगुनी करने के लिए नए कार्यक्रम शुरू करेगी।"

खंड- ग (आरोह भाग - 2 एवं वितान भाग-2 पाठ्यपुस्तकों के आधार पर)

6. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

(i) **(घ)** माता-पिता की प्रतीक्षा के कारण

व्याख्या:

माता-पिता की प्रतीक्षा के कारण

(ii) **(ख)** चिड़िया की उड़ान की गति से

व्याख्या:

चिड़िया की उड़ान की गति से

(iii) **(ख)** चिड़िया के बच्चों से

व्याख्या:

चिड़िया के बच्चों से

(iv) **(ख)** कवि से मिलने को किसी का व्याकुल न होना

व्याख्या:

कवि से मिलने को किसी का व्याकुल न होना

(v) **(ग)** समय के

व्याख्या:

समय के

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) खेत की तुलना कागज़ से करते हुए वस्तुतः कवि ने रचना-कर्म की तुलना कृषि कर्म से की है। कवि कागज के पन्ने को चौकोने खेत की संज्ञा देता है। कवि का मानना है कि जिस प्रकार खेत में बीज, जल, रसायन आदि डालने के बाद उपज या पैदावार प्राप्त की जाती है, ठीक उसी प्रकार कोई भी रचना भाव, कल्पना इत्यादि के कारण अस्तित्व में आती है।

शब्द रूपी बीज को खेत रूपी कागज के पन्ने पर डालने के बाद अंधड़ रूपी भावनाएँ तथा कल्पना रूपी रसायन की आवश्यकता पड़ती है। इन सबके सम्मिश्रण व सामंजस्य के बाद ही रचना अपना स्वरूप ग्रहण कर पाती है। किसी रचना के निर्मित होने में भी कवि को उन्ही प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है, जिन प्रक्रियाओं से खेत में फसल उत्पन्न करने में किसी किसान को गुजरना पड़ता है।

(ii) तुलसीदास ने खेती न किसान के माध्यम से अपने समाज के लोगों की जीविका विहीनता का चित्रण किया है। उन्होंने छंद के माध्यम से व्यंग्यपूर्ण वर्णन किया है और बताया है कि किसान

अपने मेहनती और संघर्षपूर्ण जीवन के बावजूद आर्थिक और सामाजिक रूप से अवशोषित रहते हैं।

(iii) विद्यार्थी स्वयं करें।

8. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) बच्चों के झुंड में बच्चों का बेसुध होकर लक्ष्य की ओर भागना, कवि को सर्वाधिक आकर्षक लगता है। इसी आकर्षण के कारण उसने इसी बिंब का चुनाव किया है। अपने लक्ष्य की ओर प्रयास करते हुए बच्चे दौड़ पड़ते हैं। उन्हें छत की कठोरता और गिरने का भय भी याद नहीं रहता। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वे किसी भी तरह प्रयास करते रहते हैं।

(ii) हमारी समझ से ये पंक्तियाँ कविता में आए संचालक द्वारा कही गई बातें हैं-
उदाहरण के लिए-
(कैमरा दिखाओ इसे बड़ा बड़ा)
(हम खुद इशारे से बताएँगे कि क्या ऐसा?)
(यह अवसर खो देंगे?)
(यह प्रश्न पूछा नहीं जाएगा)
(आशा है आप उसे उसकी अपंगता की पीड़ा मानेंगे।)
(कैमरा बस करो नहीं हुआ रहने दो परदे पर वक्त की कीमत है)
(बस थोड़ी ही कसर रह गई)
कार्यक्रम का संचालक अपने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपंग व्यक्ति को विभिन्न प्रकार से रुलाने का प्रयास करता है। वह कभी अपंग व्यक्ति, कभी दर्शकों तथा कभी कैमरामेन को बोलता है। इसके माध्यम से स्पष्ट हो जाता है कि कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए संचालक किस हद तक स्वयं को गिरा सकता है। इन पंक्तियों के माध्यम से उसका दोगला रूप दिखाई देता है। कार्यक्रम के सामाजिक उद्देश्य को पूरा करने के स्थान पर वह स्वयं के कार्यक्रम को सफल बनाने में लगा रहता है। प्रस्तुत कविता में कोष्ठकों में दी गई पंक्तियाँ टेलीविजन स्टूडियों के भीतर की दुनिया को उभारने में पूर्ण रूप से सार्थक है।

(iii) बादल राग कविता में समीर-सागर, रण-तरी, ऐ जीवन के पारावार, तथा आतंक-भव के अंदर रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है। तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया-
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया-
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,

9. **अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये:**

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रम विभाजन की दृष्टि से भी जाति-प्रथा गंभीर दोषों से युक्त है। जाति-प्रथा का श्रम विभाजन मनुष्य की इच्छा पर निर्भर नहीं रहता। मनुष्य की व्यक्तिगत भावना तथा व्यक्तिगत रुचि का इसमें कोई स्थान अथवा महत्त्व नहीं रहता। 'पूर्व लेख' ही इसका आधार है। इस

आधार पर हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न इतनी बड़ी समस्या नहीं जितनी यह कि बहुत से लोग 'निर्धारित कार्य को 'अरुचि' के साथ केवल विवशतावश करते हैं। ऐसी स्थिति स्वभावत: मनुष्य को दुर्भावना से प्रस्त रहकर टालू काम करने और कम काम करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसी स्थिति में जहाँ काम करने वालों का न दिल लगता हो न दिमाग, कोई कुशलता कैसे प्राप्त की जा सकती है। अतः यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो जाता है कि आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक प्रथा है, क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़ कर निष्क्रिय बना देती है। (बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर)

(i) **(घ)** गंभीर दोषों से
   व्याख्या:
   गंभीर दोषों से
(ii) **(क)** मनुष्य की स्वेच्छा पर
   व्याख्या:
   मनुष्य की स्वेच्छा पर
(iii) **(घ)** व्यक्तिगत भावना
   व्याख्या:
   व्यक्तिगत भावना
(iv) **(क)** कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
   व्याख्या:
   कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(v) **(क)** सभी विकल्प सही हैं
   व्याख्या:
   सभी विकल्प सही हैं

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:
(i) दंगल में विजयी होने के बाद लुट्टन सिंह राज पहलवान हो गया तथा राज दरबार का दर्शनीय जीव बन गया। मेलों में वह घुटने तक लंबा चोला पहने, मतवाले हाथी की तरह झूमता हुआ घूमता। दुकानदार भी उससे चहलबाजी करते रहते थे। उसकी बुद्धि बिलकुल बच्चों जैसी थी। सीटी बजाता, आँखों पर रंगीन चश्मा लगाए और खिलौने से खेलता हुआ वह राज दरबार में आता। राजा साहब उसका बहुत ध्यान रखते थे। अब उससे किसी को भी लड़ने की आज्ञा नहीं देते थे।
(ii) भक्तिन की तुलना हनुमान जी से इसलिए की गई है क्योंकि भक्तन महादेवी जी की सेवा उसी निस्वार्थ भाव से करती थी जिस तरह हनुमान जी श्रीराम की करते थे। हनुमान जी की भांति भक्तिन लेखिका के प्रति पूर्ण निष्ठा, प्रेम और समर्पण भाव रखती थी। वह परछाई की तरह सदैव उनके साथ रहती थी।
(iii) लेखक ने शिरीष, अवधूत और गांधी जी को एक ही श्रेणी में रखा है। इस समानता के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं-

i. कठोरता के साथ कोमलता का भाव होना। स्वयं कष्ट सह कर दूसरों के लिए जीने की प्रवृत्ति
ii. शिरीष वृक्ष का गर्मी, सर्दी, बरसात-सभी में शांत बने रहना तथा पल्लवित और पुष्पित होना
iii. अवधूत पर भी सांसारिक परिस्थितियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ना तथा जन-कल्याण व ईश्वरीय भक्ति के आनंद मे लीन रहना
iv. गांधीजी जी का अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर किए जाने वाले अन्याय, हिंसा के खिलाफ डटकर खड़े रहना

11. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) आज अपने सामान की बिक्री के लिए मज़ेदार विज्ञापनों, फ्री सेंप्लिंग होर्डिंग बोर्ड, प्रतियोगिता, मुफ्त उपहार, मूल्य गिराकर, एक साथ एक मुफ्त देकर या उससे कुछ कम मूल्य का उपहार देकर आदि तरीकों का प्रयोग किया जा रहा है। इससे सामान की बिक्री में तेज़ी आती है। ये तरीके बहुत ही कारगर हैं। हम अपने उत्पाद की बिक्री के लिए पहले फ्री सेंप्लिंग देगें। इससे हम उपभोक्ता को अपने उत्पाद की गुणवत्ता दिखाकर उनका भरोसा जीतेंगे।

(ii) लेखक को जीजी के अन्धविश्वासों पर तनिक भी विश्वास नहीं था। जीजी कहती थी कि अगर हम इन्द्र भगवान को जल नहीं देंगे तो वे हमें पानी कैसे देंगे, मेढ़क -मंडली पर जल डालना उनको समर्पितअर्ध्य है यदि मनुष्य दान में कुछ देगा नहीं तो पायेगा कैसे? ऋषियों ने भी दान और त्याग की महिमा गाई है। असली त्याग वही है कि जो चीज हमारे पास कम है उसे ही लोक-कल्याण के लिए दे दिया जाये तभी दान का फल मिलेगा।

(iii) लेखक के अनुसार लोकतंत्र केवल शासन पद्धति नहीं है। यह तो सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति और समाज के सम्मिलित अनुभवों का आदान-प्रदान है। इसमें अपने साथियों के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव होता है। यह समाज के निर्माण में पारस्परिक सहयोग और भेदभाव का पूरी तरह से त्याग है।

12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

(i) यशोधर बाबू पर किशनदा का पूर्ण प्रभाव था क्योंकि उन्होंने यशोधर बाबू को कठिन समय में सहारा दिया। यशोधर भी उनकी हर बात का अनुकरण करना चाहते थे। चाहे ऑफ़िस का कार्य हो, सहयोगियों के साथ संबंध हो, सुबह की सैर हो, शाम को मंदिर जाना, पहनने-ओढ़ने का तरीका, किराए के मकान में रहना, रिटायरमेंट के बाद गाँव जाने की बात आदि – इन सब पर किशनदा का प्रभाव है। बेटे द्वारा ऊनी गाउन उपहार में देने पर उन्हें लगता है कि उनके अंगों में किशनदा उतर आए हैं क्योंकि उन्होंने यह महसूस किया कि इस आधुनिकता के दौड़ में गृहस्थ होकर भी वह उतने ही अकेले हैं जितने कि किशनदा।

(ii) मराठी के अध्यापक सौंदलगेकर कविता के अच्छे रसिक व मर्मज्ञ थे। वे कक्षा में सस्वर कविता-पाठ करते थे तथा लय, छंद गति, आरोह-अवरोह आदि का ज्ञान कराते थे।एक बार मास्टर जी ने घर में निकली मालती लता पर कविता लिखी और उसका वाचन किया तो लेखक उससे बहुत प्रभावित हुआ क्योंकि प्रत्यक्ष देखने पर उसका वर्णन एकदम सटीक था। उनसे प्रेरित होकर लेखक भी कुछ तुकबंदी करने लगा। उन्हें यह ज्ञान हुआ कि कवि भी उनकी तरह ही होते हैं । वे भी अपने आस-पास के दृश्यों पर कविता बना सकते हैं। धीरे-धीरे उन्होंने तुकबंदी आरंभ की,

मास्टरजी के प्रोत्साहन से स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक आनंद यादव के मन में पैदा हुआ।

(iii) सिंधु सभ्यता को आडंबर विहीन सभ्यता कहा जा सकता है, और इसके कई प्रमाण "अतीत में दबे पाँव" पाठ में मिलते हैं। आइए, इसे कुछ उदाहरणों के माध्यम से समझते हैं:

i. **साधन-संपन्नता और सादगी**
   - सिंधु सभ्यता अत्यंत साधन-संपन्न थी, लेकिन इसमें भव्यता का आडंबर नहीं था। मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा जैसे शहरों की खुदाई में मिली वस्तुएँ और निर्माण शैली इस बात का प्रमाण हैं। यहाँ के लोग अपनी आवश्यकताओं के अनुसार निर्माण करते थे, न कि दिखावे के लिए।
   - उदाहरण: मुअनजो-दड़ो की जल-निकासी व्यवस्था और अन्न-भंडारण प्रणाली अत्यंत विकसित थी, लेकिन इसमें कोई भव्यता नहीं थी।

ii. **समाज-पोषित सौंदर्य-बोध**
   - सिंधु सभ्यता का सौंदर्य-बोध समाज-पोषित था, न कि राज-पोषित या धर्म-पोषित। यहाँ की कला और वास्तुकला में समाज की आवश्यकताओं और सुरुचि का ध्यान रखा गया था।
   - उदाहरण: यहाँ की मूर्तियाँ, मृद्-भांडे, और मुहरें समाज की सुरुचि और कला-बोध को दर्शाती हैं, न कि किसी राजा या धर्म के प्रभाव को।

iii. **अनुशासन और समझ**
   - सिंधु सभ्यता ताकत से शासित होने की बजाय समझ से अनुशासित थी। यहाँ के नगर-नियोजन और सामाजिक व्यवस्थाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि यहाँ के लोग समझदारी से अपने समाज का संचालन करते थे।
   - उदाहरण: मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा में मिले अवशेषों में हथियारों की कमी यह दर्शाती है कि यहाँ का समाज सैन्य शक्ति पर निर्भर नहीं था।